

कार्यक्रम के लिए निर्धारित मैदान पर कथित तौर पर कुछ लोगों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी। इसके बाद मामला बढ़ गया और मैतेई तथा मैतेई पांगल समुदायों के सदस्यों के बीच हिंसक झड़प हो गई। मैतेई पांगल समुदाय को मणिपुरी मुस्लिम समुदाय के नाम से भी जाना जाता है। हिंसा पर काबू पाने के लिए प्रशासन ने रविवार रात 11 बजे से प्रभावित क्षेत्रों में निषेधाज्ञा लागू कर दी। कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य और केंद्रीय सुरक्षा बलों के अतिरिक्त जवानों को भी तैनात किया गया है।

संपादकीय



बिश्नोई गैंग: खौफ, धमकियां और कानून के सामने बड़ी चुनौती

लॉ रेंस बिश्नोई गैंग से जुड़ी धमकियों, जबरन वसूली और गोलीबारी की घटनाओं ने एक बार फिर देश में संगठित अपराध की चुनौती को गंभीर बना दिया है। फिल्मी हस्तियों को निशाना बनाने की कथित धमकियों से लेकर कारोबारियों को डराने तक, ऐसे मामलों ने पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों के सामने कई सवाल खड़े किए हैं। हालिया घटनाक्रम के संदर्भ में मुंबई में अभिनेता टाइगर श्रॉफ की कार पर गोलीबारी और सलमान खान को लेकर सामने आई कथित धमकियों की खबरों ने इस मुद्दे को फिर चर्चा में ला दिया है। हालांकि, किसी घटना में गैंग की वास्तविक भूमिका का निर्धारण पुलिस जांच और ठोस सबूतों के आधार पर ही किया जाना चाहिए। लॉरेंस बिश्नोई का नाम पिछले कई वर्षों से विभिन्न गंभीर आपराधिक मामलों की जांच में सामने आता रहा है। उसके कथित नेटवर्क और सहयोगियों को लेकर जांच एजेंसियां समय-समय पर कार्रवाई करती रही हैं। इस तरह के आपराधिक नेटवर्क की चुनौती केवल किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं होती। इसमें कथित तौर पर स्थानीय अपराधियों, हथियारों की आपूर्ति करने वालों, वित्तीय मददगारों और धमकी देने के लिए डिजिटल माध्यमों का इस्तेमाल करने वाले लोगों की भूमिका की जांच करनी पड़ सकती है। इसलिए संगठित अपराध के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई के लिए पूरे नेटवर्क को समझना आवश्यक है। सबसे चिंताजनक पहलु यह है कि धमकी और हिंसा का इस्तेमाल कई बार लोगों में भय पैदा करने तथा अवैध मांगें मनवाने के लिए किया जाता है। यदि किसी कारोबारी, कलाकार या आम नागरिक को इस आशंका में रहना पड़े कि विरोध करने पर उसे नुकसान पहुंचाया जा सकता है, तो यह कानून के शासन के लिए गंभीर चुनौती है। किसी भी लोकतांत्रिक समाज में सुरक्षा का अधिकार सभी नागरिकों को समान रूप से मिलना चाहिए। किसी व्यक्ति की लोकप्रियता, आर्थिक स्थिति या सामाजिक पहचान के आधार पर उसकी सुरक्षा का महत्व कम या अधिक नहीं आंका जा सकता। फिल्म उद्योग को लेकर होने वाली घटनाएं अक्सर व्यापक मीडिया कवरेज हासिल करती हैं। इसका कारण कलाकारों की लोकप्रियता और मनोरंजन जगत में उनकी सार्वजनिक पहचान है। लेकिन ऐसी घटनाओं को केवल बॉलीवुड तक सीमित करके देखना समस्या की वास्तविक गंभीरता को कम करना होगा। जबरन वसूली और आपराधिक धमकियों से छोटे कारोबारी, व्यापारी, उद्यमी और अन्य नागरिक भी प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए इन मामलों को कानून-व्यवस्था और नागरिक सुरक्षा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने की जरूरत है। सोशल मीडिया ने संगठित अपराध की जांच को एक नया आयाम दिया है। किसी घटना के बाद इंटरनेट पर प्रसारित संदेश, ऑडियो क्लिप या जिम्मेदारी लेने के दावे तेजी से फैलते हैं। कुछ मामलों में ऐसे संदेश भय पैदा करने और अपनी कथित ताकत का प्रदर्शन करने के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। लेकिन केवल किसी पोस्ट या संदेश के आधार पर किसी गिरोह की भूमिका को प्रमाणित नहीं माना जा सकता। पुलिस को डिजिटल साक्ष्यों की प्रामाणिकता की जांच करनी चाहिए और यह पता लगाना चाहिए कि संदेश किसने भेजा, उसका घटना से क्या संबंध है और उसके पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या था। इस चुनौती से निपटने के लिए पुलिस को केवल घटनाओं के बाद कार्रवाई करने के बजाय अपराध की रोकथाम पर भी ध्यान देना होगा। अवैध हथियारों की आपूर्ति रोकना, जबरन वसूली से जुड़े वित्तीय लेन-देन की जांच करना, संदिग्ध संपर्कों का कानूनी तरीके से विश्लेषण करना और विभिन्न राज्यों की पुलिस के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान बढ़ाना महत्वपूर्ण कदम हैं। यदि किसी मामले में जेल से आपराधिक गतिविधियों के संचालन के प्रमाण मिलते हैं, तो संबंधित नियमों के तहत निगरानी और कार्रवाई की जानी चाहिए इसके साथ ही, जांच एजेंसियों को कानून और नागरिक अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखना होगा। किसी व्यक्ति पर आरोप लगना और अदालत में उसका अपराध साबित होना दो अलग-अलग बातें हैं। निष्पक्ष जांच, विश्वसनीय सबूत और न्यायिक प्रक्रिया का पालन यह सुनिश्चित करते हैं कि दोषियों को सजा मिले और निर्दोष लोगों के अधिकार सुरक्षित रहें। अपराध के खिलाफ कठोर कार्रवाई का अर्थ कानूनी प्रक्रियाओं की अनदेखी करना नहीं, बल्कि उन्हें प्रभावी ढंग से लागू करना है।

विजयादशमी: विजय के पर्व में विदाई की संवेदना

कुमार कृष्णन

भारत की सांस्कृतिक विविधता का सबसे सुंदर रूप उसके त्योहारों में दिखाई देता है। एक ही पर्व अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग मान्यताओं और लोक-परंपराओं के साथ मनाया जाता है। दशहरा इसका उल्लेखनीय उदाहरण है। देश के अनेक हिस्सों में जहां यह पर्व भगवान राम की रावण पर विजय के रूप में मनाया जाता है, वहीं बंगाल, ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा की परंपरा इसके स्वरूप को एक अलग भावभूमि प्रदान करती है। यहां मां दुर्गा केवल महिषासुर का वध करने वाली शक्ति नहीं, बल्कि ऐसी बेटी भी हैं जो अपने मायके आती हैं और कुछ दिनों के प्रवास के बाद ससुराल लौट जाती हैं। इसीलिए विजयादशमी का दिन यहां विजय के उल्लास के साथ विदाई की भावुकता भी लेकर आता है। बंगाल में दुर्गा पूजा वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उत्सव है। शारदीय नवरात्र में षष्ठी से विजयादशमी तक पूजा-पंडालों, मंदिरों और घरों में उत्सव का वातावरण रहता है। विशाल प्रतिमाएं, आकर्षक सजावट, ढाक की गूंज, धनुची नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम इसे जनजीवन का अभिन्न हिस्सा बना देते हैं। इन दिनों देवी दुर्गा की आराधना शक्ति, साहस और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक के रूप में की जाती है। पौराणिक मान्यता के अनुसार देवी ने महिषासुर का वध कर संसार को



उसके अत्याचार से मुक्ति दिलाई थी। बंगाल की दुर्गा पूजा का दूसरा पक्ष इसे विशिष्ट भावनात्मक गहराई देता है। लोकमान्यता में मां दुर्गा को उमा के रूप में देखा जाता है, जो अपने पति शिव के निवास कैलाश से मायके अनुष्ठान नहीं रहने देती, बल्कि उसे पारिवारिक आत्मीयता से जोड़ देती है। बंगाल के पारंपरिक आगमनी गीतों में बेटी के आगमन की खुशी और विदाई गीतों में बिछोह की वेदना सुनाई देती है। विजयादशमी पर इसी भावभूमि पर देवी की विदाई होती है। विवाहित महिलाएं देवी को सिंदूर अर्पित करती हैं और एक-दूसरे को सिंदूर लगाती हैं, जिसे सिंदूर खेला कहा जाता है। इसके साथ मिठाइयां बांटी जाती हैं और शुभ

विजय की मंगलकामनाएं दी जाती हैं। यह परंपरा देवी को बेटी और सुहागिन के रूप में देखने वाली लोकभावना से जुड़ी है। इसके बाद ढाक की थाप और जयकारों के बीच प्रतिमाओं का विसर्जन होता है। श्रद्धालु अगले वर्ष फिर आने की कामना करते हैं। इस तरह बंगाल में विजयादशमी आनंद और विषाद, मिलन और बिछोह का अद्भुत संगम बन जाती है। ओडिशा में भी दुर्गा पूजा व्यापक रूप से प्रचलित है। कटक अपनी साज-सज्जा और चांदी की झांकियों के लिए प्रसिद्ध है। यहां पूजा में स्थानीय कलात्मक परंपराओं और सामुदायिक सहभागिता की महत्वपूर्ण भूमिका है। राज्य की सांस्कृतिक विविधता को समझना जरूरी है कि यहां सभी परंपराएं एक जैसी नहीं हैं। बालासोर जैसे क्षेत्रों में रहने वाले बंगाली समुदायों के बीच विजयादशमी पर सिंदूर खेला,

अंकिता को न्याय दिलाने की मांग पर इंडिया गेट पर प्रदर्शन, 30 से अधिक लोग हिरासत में

संवाददाता

नई दिल्ली। अंकिता भंडारी हत्याकांड की निष्पक्ष जांच मांग को लेकर रविवार को इंडिया गेट पर प्रदर्शन हुआ। राष्ट्रपति को ज्ञापन देने के लिए राष्ट्रपति भवन की ओर बढ़ रहे 30 से अधिक प्रदर्शनकारियों को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में ले लिया। प्रदर्शनकारियों के अनुसार, पुलिस उन्हें जाफरपुर कलां थाने ले गई। प्रदर्शन का आह्वान उत्तराखंड के सामाजिक कार्यकर्ता मोहित डिमरी ने किया था। उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोग सुबह पटियाला हाउस के पास एकत्र हुए और बाद में इंडिया गेट पहुंचे। प्रदर्शनकारियों ने अंकिता को न्याय दिलाने, मामले में कथित वीआईपी की भूमिका की जांच कराने और दुष्प्रति गौतम की नियुक्ति रद्द करने की मांग



वाले पोस्टर और बैनर लेकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों के राष्ट्रपति भवन की ओर मार्च शुरू करने पर पुलिस ने उन्हें रोक दिया। इस दौरान धक्का-मुक्की हुई। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर बल प्रयोग करने का आरोप लगाया। पुलिस की कार्रवाई के विरोध में वे सड़क पर बैठ गए और अपनी मांगों को लेकर नारेबाजी की।

पेज 1 का शेष...

ओआईसी की बैठक...

बयान में कहा गया कि महिलाओं और बच्चों सहित कई लोगों की मौत हुई है तथा मीडिया पर प्रतिबंध लगाने के बावजूद मानवाधिकारों के कथित गंभीर उल्लंघनों को छिपाया नहीं जा सका है। भारत ने कहा कि जम्मू-कश्मीर से जुड़े केवल दो मुद्दे बाकी हैं। पाकिस्तान को उन क्षेत्रों से अपना अवैध और जबरन कब्जा हटाना चाहिए, जिन पर उसने कब्जा कर रखा है। इसके साथ ही उसे सीमा पार आतंकवाद को समर्थन देना बंद करना चाहिए। मंत्रालय ने ओआईसी के प्रस्तावों में इस्लामोफोबिया सहित भारत के खिलाफ अन्य कथित मनगढ़ंत और शत्रुतापूर्ण संदर्भों को पाकिस्तान की हताश कोशिश बताया। भारत के अनुसार, पाकिस्तान इन मुद्दों के माध्यम से अपने यहां अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न, सांप्रदायिक हिंसा, शासन की

विफलताओं और राजनीतिक अस्थिरता से अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान हटाना चाहता है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि पाकिस्तान के दुर्भावनापूर्ण प्रचार और उसके कथानकों का ओआईसी द्वारा बार-बार समर्थन किया जाना संगठन की विश्वसनीयता और निष्पक्षता पर गंभीर सवाल खड़े करता है। मंत्रालय ने उम्मीद जताई कि संगठन के सदस्य देश इस स्थिति में सुधार के लिए उचित कदम उठाएंगे। उल्लेखनीय है कि इस्लामिक सहयोग संगठन में कुल 57 सदस्य देश हैं। इसकी स्थापना 25 सितंबर 1969 को हुई थी और इसका मुख्यालय सऊदी अरब के जेद्दा शहर में स्थित है। संगठन के अधिकांश सदस्य देश एशिया और अफ्रीका महाद्वीप में हैं। यूरोप से अल्बानिया, जबकि दक्षिण अमेरिका से गुयाना और सूरीनाम इसके सदस्य हैं।

व्यंग्य: लंकापति दशानन की व्यथा

सुधाकर आशावादी

लंकापति विचारमग्न हैं, उस लम्हे को कोस रहे हैं जब उनसे एक स्त्री के अपहरण का अपराध हो गया था। मार्ग में पक्षीराज जटायु से भिड़ंत होने पर भी उनका विवेक जागृत नहीं हुआ था। सदियों बीत गईं, मगर अपराध का दंड अब तक भुगत रहे हैं। एक अपहरण की इतनी बड़ी सजा! वह सोच रहे हैं कि यदि किसी अपराधी को मौत की सजा दी जाती है, तो एक बार ही दी जाती है, वह भी क्रूरतापूर्ण कृत्य के लिए। इसके लिए कुछ आधार गिनाए जाते हैं, फिर सजा के विरुद्ध अपील होती है, अपील खारिज होने पर आरोपी को फांसी के फंदे पर लटकाया जाता है, तब सजा पूर्ण होती है। बहरहाल, एक समय था जब अपहरण का दोष सिद्ध होने पर महाबली रावण को मौत की सजा मिली। यह अलग बात है कि अपहरणकर्ता को अपने बचाव का पूरा अवसर प्रदान किया गया। लड़ाई को सुर और असुर के मध्य युद्ध की संज्ञा दी गई। रावण का वध करने वाले की विजय को सत्य की विजय और असत्य की हार निरूपित किया गया। अपहरण और युद्ध के बीच का अंतराल भी लंबा था। अपहरण किस तिथि को किया गया, यह सुनिश्चित नहीं हो सका। फिर भी युद्ध का ऐलान हुआ। सेनाएं एक-दूसरे के सामने खड़ी हुईं, मारकाट मची। दोनों से से योद्धाओं ने अपने प्राण गंवाए। युद्ध की विभीषिका ऐसी ही होती है। बहरहाल, युद्ध एक बार हुआ, किंतु उसकी पुनरावृत्ति न जाने कब से हो रही है। गांव-गांव, शहर-शहर रामलीला का मंचन होता है। राम-रावण का युद्ध होता है, हर बार रावण



की नाभि में तीर मारकर उसका वध किया जाता है। उसके बाद रावण का बड़े आकार का पुतला खड़ा करके दहन किया जाता है। रावण दहन की प्रक्रिया में भीड़ तालियां बजाती है, रावण का पुतला धू-धू कर जलता है। रामलीला समाप्त होती है और लोग अपने घरों को लौट जाते हैं। हर वर्ष यही होता है। प्रतिवर्ष दहन होने के कारण रावण को भी आदत पड़ चुकी है कि वह प्रतिवर्ष जले, अग्नि की भेंट चढ़े। लोग भी जानते हैं कि वे रावण दहन की औपचारिकता पूरी कर रहे हैं। उनके भीतर जो बुराइयों का रावण विराजमान है, उस रावण का वध करने की हिम्मत रावण-वध करने वालों में भी

नहीं है। विजयदशमी के दिन प्रातः रावण महोदय मुझे हलवाई की दुकान पर मिल गए। नाश्ता करने आए थे। जलेबी-कचौड़ी का नाश्ता उन्हें प्रिय है, सो वे दोनों में कचौड़ी और दम-आलू की सब्जी का स्वाद ले रहे थे। मैंने कहा – कैसे हो? वे बोले – ठीक हूं, अपने अमर होने का कष्ट भोग रहा हूं। मैंने पूछा – आप तो युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो गए थे, फिर अमर कैसे हो गए? वे बोले – भले ही राम के तीरों से छलनी होकर मेरी देह की मृत्यु हो गई हो, मगर मुझे किसी ने

चैन से मरने भी नहीं दिया। संसार की दृष्टि में मैं जीवित हूं। यदि जीवित नहीं होता, तो विजयदशमी पर प्रतिवर्ष मेरा वध क्यों किया जाता? रावण की तर्क-क्षमता का मैं कायल हो गया। यदि एक बार रावण की मृत्यु हो गई, तो बार-बार उसकी देह का दहन करने का औचित्य क्या है? मैंने कहा- रावण जी, आप ठीक कहते हैं। आपने एक स्त्री का हरण ही तो किया था, वह भी अपनी बहन का अपमान किए जाने से क्रुद्ध होकर, उसकी सजा भी मिल गई, मगर सदियों बीतने के बाद भी हर बार आपका दहन किया जाता है। यह तो सरासर नाईसाफी हुई। रावण बोला – तुमने मेरा दर्द समझा, मेरे लिए यही बहुत है। आजकल भीडतंत्र में कोई ईसाफ की बात ही नहीं करता। अपहरण की सजा कुछेक सालों की होती है। मैंने तो कोई दुराचार भी नहीं किया। जिसका अपहरण किया, उसे सुरक्षा के पहरे में रखा, फिर भी मुझे सजा ऐसी मिली कि लोग मेरी मृत्यु का भी उत्सव मनाते हैं। मैंने कहा – रावण जी, संचार-क्रांति का युग है। आपको बुराई का प्रतीक मानकर आपका पुतला दहन किया जाता है। रावण बोला – यदि मैं बुराई का प्रतीक हूं, तो पुरुषों को अपमानित करने वाली स्त्रियां, उन्हें नीले ड्रम की भेंट चढ़ाने वाली स्त्रियां, स्त्रियों को टुकड़ा-टुकड़ा करके फ्रिज में रखने वाले तत्वों को कौन सी श्रेणी में रखा जाएगा? मैंने चुप्पी साधने में ही भलाई समझी। रावण के तर्क का मेरे पास कोई तर्कपूर्ण उत्तर नहीं था।

मिठाइयों का आदान-प्रदान और शुभ विजय की बधाइयां विशेष महत्व रखती हैं। देवी को मायके से ससुराल लौटने वाली बेटी की तरह विदा करने का भाव धार्मिक अनुष्ठान को आत्मीय पारिवारिक अनुभव में बदल देता है। असम में दुर्गा पूजा की परंपरा बंगाल से सांस्कृतिक निकटता रखते हुए भी अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ विकसित हुई है। गुवाहाटी सहित विभिन्न नगरों में पंडाल सजाए जाते हैं और श्रद्धालु पूजा में भाग लेते हैं। असम की पहचान में शक्ति-उपासना का विशेष स्थान है। कामाख्या जैसी शक्तिपीठ परंपरा इस क्षेत्र की धार्मिक चेतना को ऐतिहासिक गहराई देती है, हालांकि शारदीय दुर्गा पूजा और कामाख्या की पूजा-पद्धति अलग-अलग परंपराएं हैं। असम के कुछ क्षेत्रों में बंगाली समुदायों द्वारा सिंदूर खेला

और भावपूर्ण विदाई की परंपरा भी निभाई जाती है। बंगाल, ओडिशा और असम की इन परंपराओं में एक समान सूत्र है, श्रद्धा को मानवीय रिश्तों की आत्मीयता से जोड़ना। मां दुर्गा जहां दुष्ट शक्तियों का संहार करने वाली दिव्य शक्ति हैं, वहीं वह बेटी भी हैं जिनके आगमन से मायका आनंदित होता है और विदाई पर भावुक हो उठता है। यहां विजयादशमी का अर्थ केवल विजय का उत्सव नहीं, बल्कि विदाई की संवेदना, पुनर्मिलन की आशा और शुभता के स्वागत की आकांक्षा भी है। प्रतिमा जल में विलीन हो जाती है, पर उसके आगमन और विदाई से जुड़ी भावनाएं मन में बनी रहती हैं। अगले वर्ष फिर आने की प्रतीक्षा यह विश्वास जीवित रखती है कि कठिनाइयों के बावजूद आशा, शक्ति और सद्भाव की वापसी संभव है।



एल.आई.सी
भारतीय जीवन बीमा
से संबंधित किसी भी
जानकारी या समस्या
समाधान हेतु संपर्क करें।
-भारत सिंह
मो. 9967255741

महत्वपूर्ण सूचना

विज्ञापन प्रति के स्वीकृति पूर्व एहतियातन बरती जाने के बावजूद, उसमें अंतर्भूत बाते जाँचना संभव नहीं है। ऐसी अंतर्भूत बातों के लिए दैनिक स्वर्णिम प्रदेश के अंतर्गत समाचार पत्र या प्रकाशनों में आनेवाली कंपनियां, संस्थाएं या व्यक्तिगत विज्ञापनों के साथ हुए किसी भी प्रकार के व्यवहार के लिए समाचार पत्र जिम्मेदार नहीं है।

आज का राशिफल

मेघ: परिवार की चिंता रहेगी। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। थकान रहेगी। पिता का स्वास्थ्य संतोष देगा। अहंकार के भाव मन में न आने दें। व्यापार में नई योजनाओं से लाभ होगा। आर्थिक स्थिति संतोषप्रद रहेगी।
वृषभ: धनागम होगा। भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी। रोजगार मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। जल्दबाजी न करें। नौकरी में ऐच्छिक स्थानांतरण एवं पदोन्नति के योग हैं। स्वाध्याय के महत्व को समझें। संतान को अपने कार्यों में सफलता मिल सकेगी।
मिथुन: व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रमाद न करें। स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। विद्यार्थी वर्ष सफलता हासिल करेंगे। कार्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न बाधाओं से मन अशांत रहेगा। स्वार्थ एवं भोग की प्रवृत्ति से दूर रहें। कार्यस्थल पर प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाएँगे।
कर्क: लाभ के अवसर हाथ से निकलेंगे। शत्रु से सतर्क रहें। काम के प्रति लापरवाही न करें, किसी बात पर मतभेद की संभावना है। शारीरिक कष्ट से बाधा संभव है। विवाद न करें। दुःखद समाचार मिल सकता है। काम के प्रति लापरवाही न करें।
सिंह: सुख के साधन जुटेंगे। शत्रु परास्त होंगे। सुखवृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होगी। आर्थिक योजनाओं में धन का निवेश हो सकता है। प्रयास सफल रहेंगे। मान-सम्मान मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। पड़ोसियों से किसी बात पर मतभेद की संभावना है।
कन्या: मित्रों की मदद से समस्या का समाधान हो सकेगा। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। मान बढ़ेगा। धनार्जन होगा। थकान रहेगी। रचनात्मक कार्य में मन लगेगा। अपना व्यवहार संयमित रखकर काम करें। समय का सदुपयोग होगा। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है।
तुला: व्यापार में मनोकुल लाभ होने के योग हैं। प्रसन्नता में वृद्धि होगी। कामकाज की जिज्ञासा बढ़ेगी। बेरोजगारी दूर होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यों में सफलता की संभावना है।
वृश्चिक: अनसोचे कार्य होंगे। दौपत्य जीवन में मनमुटाव हो सकता है। पारिवारिक समस्याएँ सूझबूझ से निपटाएँ। कार्य में सहयोग मिलेगा। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। फालतू खर्च होगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें। पुराना रोग उभर सकता है। कुसंगति से हानि होगी।
धनु: प्रयास सफल रहेंगे। योजना बनेगी। आशानुरूप स्थिति बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। व्यापारिक गोपनीयता भंग न करें। पूंजी निवेश लाभकारी रहेगा। व्यापार की चिंता रहेगी। पुराना रोग उभर सकता है। बेवैनी रहेगी। आपसी विचार-विमर्श लाभप्रद रहेगा।
मकर: मान-सम्मान बढ़ेगा। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। पारिवारिक तनाव से मन परेशान रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नए अनुबंध हो सकते हैं। व्यवसाय ठीक चलेगा। लाभ में कमी आ सकती है। उचित मार्गदर्शन लेना जरूरी होगा। प्रमाद न करें।
कुंभ: धनार्जन होगा। प्रसन्नता रहेगी। यश, प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग हैं। मनोरंजन के अवसर उपलब्ध होंगे। अनसोचे कामों में हाथ नहीं डालें। कामकाज की जिज्ञासा बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। कानूनी अड़चन दूर होगी।
मीन: व्यापार में लाभ होने के योग हैं। धार्मिक कामों में रुचि बढ़ेगी। चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि संभव है। जोखिम न लें। झंझटों में न पड़ें। आय में कमी होगी। परिवार में किसी से विवाद हो सकता है। अपनी स्थिति, योग्यता के अनुरूप कार्य करें।

Ladakh’s Demands Addressed, People Have Faith in Centre: HP Governor

JAMMU: Himachal Pradesh Governor Kavinder Gupta on Monday said the Centre had taken several steps to address the demands of the people of Ladakh, asserting that they continued to have faith in the central government. Gupta, who had served as Lieutenant Governor of the Union Territory from July 18, 2025 to March 13, 2026, stressed that dialogue remained the only way to resolve outstanding issues, adding that the Centre's steps, in some respects, exceeded the people's expectations. The governor also extended Dussehra greetings to the people, describing the festival as a celebration of Lord Ram's victory over evil. Talking to PTI videos after visiting Bawe Wali Mata Temple in Jammu to offer prayers on the occasion of Sharadiya Navaratri, the governor cited the creation of eight districts, the establishment of a bench of the High Court of J&K and Ladakh in Leh and ongoing infrastructure projects, in-



cluding tunnels to improve connectivity across the region, especially in the border areas. Naturally, solutions can emerge only through dialogue...the government has delivered on the demands raised by the people (of Ladakh), and what they have received is even better than what they had initially expected, the governor said, responding to the ongoing talks between the Centre and the local leadership of Leh Apex Body and Kargil Democratic Alliance. On the prevailing situation post Leh violence in September last year that left four persons dead during pro-

tests in support of sixth schedule and statehood, he said people are happy and prosperous, and they have faith in the Centre as their demands have been fulfilled. Asked about the firing at actor Tiger Shroff in Mumbai on Sunday, the governor said the incident should be thoroughly investigated and those responsible identified and arrested. Referring to his visit to the temple, he said, Mata Bawe Wali is regarded as the guardian deity of Jammu, and it is believed that wishes made here are fulfilled. Since I had the opportunity to visit today, seeking the blessings of the goddess was only natural. He further prayed for peace and prosperity in Jammu and Kashmir, and for the happiness of every family, the governor said. He said Prime Minister Narendra Modi has a vision of a developed India by 2047, and I pray that Mata Rani gives strength to all nationalist forces to help realise this dream.

Yogi Adityanath to Lead Traditional Vijayadashami Procession in Gorakhpur

GORAKHPUR: The holy festival of Vijayadashmi (Dussehra) is going to be a witness to the ancient tradition of Gorakhpeeth, the spirit of public welfare and the vibrant philosophy of social harmony. On the auspicious occasion of Vijayadashmi on Tuesday, Gorakhpeethadhiswar and Chief Minister Yogi Adityanath will perform special worship of Shiva avatar Mahayogi Guru Gorakhnath as per the rituals and will lead the Vijay Shobha Yatra starting

from Gorakhnath Temple. This Shobha Yatra, which will start amidst the sound of trumpets, drums and traditional musical instruments, is not only a symbol of Sanatan faith, but also gives the biggest message of social unity and harmony in Purvanchal. Chief Minister Yogi Adityanath on Tuesday, will perform a special puja for Shivavatar Guru Gorakhnath in the morning, and in the evening, he will lead the traditional Vijayadashami procession from



the Gorakhnath Temple. The procession will conclude at the Mansarovar Ramlila Grounds, where the Gorakshapeethadhiswar will perform the puja and coronation of Lord Shri Ram. Strengthening the fabric of social harmony and cherishing the spirit of overall public welfare, the Vijay Shobha Yatra that starts every year on Vijayadashami from Gorakhpeeth is unique. People from all walks of life participate in the traditional procession led by the Gorakhpeethadhiswar, and it is also given a grand welcome by the members of the minority community. The festival of Vijayadashami is also an opportunity to observe the uniqueness of Gorakh-

peeth and the breadth of its mission on a larger scale. The Vijayadashami Shobha Yatra of Gorakhnath Temple is also attractive and unique because the members of the minority community also stand with garlands at a short distance from the main gate of Gorakhnath Temple to welcome it, hours in advance. In keeping with the tradition of the Gorakhpeeth, this year too, on Vijayadashami, a grand procession of Gorakhpeethadhiswar Yogi Adityanath will be taken out from the Gorakhnath Temple on Tuesday evening. On Vijayadashami, the Gorakhpeethadhiswar wears special attire, as per the Nath sect tradition. The Peethadhiswar will board his vehicle after receiving the blessings of Guru Gorakhnath. The procession will arrive at the Mansarovar Temple amid the sound of trumpets, drums, and band music. Upon reaching there, Gorakhpeethadhiswar Yogi Adityanath will worship Lord

Shiva at the Mansarovar Temple, associated with the Gorakhpeeth. Afterward, his procession will proceed to the Mansarovar Ramlila Maidan. He will perform the coronation of Lord Shri Ram during the ongoing Ramlila. Along with this, prayers will be offered to Lord Shri Ram, Mother Janaki, Lakshman, and Hanumanji, and aarti will be performed. Gorakhpeethadhiswar and Chief Minister Yogi Adityanath will also address the gathering at the Ramlila Maidan.

Shiva at the Mansarovar Temple, associated with the Gorakhpeeth. Afterward, his procession will proceed to the Mansarovar Ramlila Maidan. He will perform the coronation of Lord Shri Ram during the ongoing Ramlila. Along with this, prayers will be offered to Lord Shri Ram, Mother Janaki, Lakshman, and Hanumanji, and aarti will be performed. Gorakhpeethadhiswar and Chief Minister Yogi Adityanath will also address the gathering at the Ramlila Maidan.

Shiva at the Mansarovar Temple, associated with the Gorakhpeeth. Afterward, his procession will proceed to the Mansarovar Ramlila Maidan. He will perform the coronation of Lord Shri Ram during the ongoing Ramlila. Along with this, prayers will be offered to Lord Shri Ram, Mother Janaki, Lakshman, and Hanumanji, and aarti will be performed. Gorakhpeethadhiswar and Chief Minister Yogi Adityanath will also address the gathering at the Ramlila Maidan.

भारत बांगलादेश किंवा फ्रान्स नाही, सत्ताबदलाच्या वक्तव्यावरून रिजिजूचा विरोधकांवर हल्लाबोल

नवी दिल्ली: केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू यांनी रविवारी विरोधकांवर आणि भारतविरोधी गटांवर देशात हिंसा व अशांतता भडकवण्याचा कट रचल्याचा गंभीर आरोप केला. बांगलादेश आणि अलीकडेच फ्रान्समध्ये पाहायला मिळालेल्या घटनांप्रमाणेच भारतातही आंदोलने आणि दंगली घडवून आणण्याचा प्रयत्न करण्यात आल्याचे त्यांनी म्हटले. 'एक्स'वरील एका पोस्टद्वारे रिजिजू यांनी दावा केला की, काही राजकारणी आणि जनविरोधी घटकांनी एकत्र येऊन तरुणांना सूचना दिली. तसेच रस्त्यांवर हिंसाचार, जाळपोळ आणि लुटालूट घडवून आणण्याचा प्रयत्न केला. रिजिजू म्हणाले, 'या धोकादायक कटामागे असलेले लोक हे विसरले की भारत हा बांगलादेश किंवा फ्रान्स नाही. भारतात सत्ताबदल होणे पूर्णपणे शक्य आहे; मात्र तो केवळ निष्पक्ष निवडणुकांच्या माध्यमातूनच होऊ शकतो, जॉर्ज सोरोस यांच्या माध्यमातून नाही.' आपल्या वक्तव्यासोबत केंद्रीय मंत्र्यांनी एक व्हिडिओही



शेअर केला. त्यामध्ये ऑल इंडिया स्टुडंट्स असोसिएशनच्या (आयसा) अध्यक्षा नेहा बोरा आणि ज्येष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण हे सत्ताबदलाची बाजू मांडताना दिसत आहेत.दिल्लीमध्ये मुख्य निवडणूक आयुक्त ज्ञानेश कुमार यांच्याविरोधात आंदोलने सुरू असताना रिजिजू यांनी हे वक्तव्य केले आहे. या आंदोलनांदरम्यान विरोधी पक्षांचे नेते आणि विद्यार्थी संघटनांनी सत्ताबदलाचा उल्लेख केला होता. त्यामुळे नव्या राजकीय वादला तोंड फुटले आहे. यापूर्वी प्रशांत भूषण यांनी हे आंदोलन म्हणजे विरोधकांकडून सत्ताबदल घडवून आणण्याचा प्रयत्न असल्याचा सरकारचा दावा फेटाळून लावला होता. भूषण म्हणाले, 'सरकार सातत्याने सांगत आहे की, हे विरोधकांचे सत्ताबदलाचे

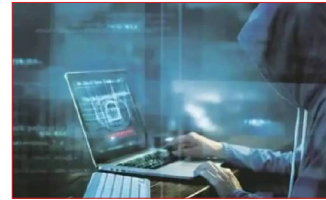
अभियान आहे. मात्र, आम्ही केवळ या देशातील निवडणूकांधारित लोकशाही वाचवण्याचे आवाहन करत आहोत.' ते पुढे म्हणाले, 'अशाच प्रकारची कूरता सुरू राहिली, तर सत्ताबदल नक्कीच होईल. आम्हा सर्वांना सत्ताबदल हवा आहे. यात चुकीचे काय आहे ? सत्ताबदल हा प्रत्येक नागरिकाचा लोकशाही अधिकार आहे. सरकारविरोधात असतोष निर्माण करणे हा काही गुन्हा नाही.' आपल्या वक्तव्याच्या समर्थनाथं रिजिजू यांनी एक व्हिडिओही सोशल मीडियावर शेअर केला. या व्हिडिओमध्ये ऑल इंडिया स्टुडंट्स असोसिएशनच्या (आयसा) अध्यक्षा नेहा बोरा आणि ज्येष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण हे सत्ताबदलाच्या मुद्द्यावर आपली भूमिका मांडताना दिसत आहेत. या व्हिडिओच्या आधारे रिजिजू यांनी विरोधकांच्या आंदोलनामागील हेतूवर प्रश्नचिन्ह उपस्थित केले आहे. तथापि, हिंसाचार घडवण्याचा कट रचल्याच्या आरोपांबाबत स्वतंत्रपणे पुष्टी झालेली माहिती समोर आलेली नाही.

दुष्यंत कुमार गौतम यांनी सिक्कीमचे 21 वे राज्यपाल म्हणून घेतली शपथ

गंगटोक: दुष्यंत कुमार गौतम यांनी सोमवारी राजधानीतील लोकभवन येथे आयोजित समारंभात सिक्कीमचे २१ वे राज्यपाल म्हणून पदाची आणि गोपनीयतेची शपथ घेतली. सिक्कीम उच्च न्यायालयाचे मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ती ए. मोहम्मद मुस्ताक यांनी त्यांना शपथ दिली. या समारंभाला मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग, राज्यातील मंत्री, आमदार आणि इतर प्रतिष्ठित व्यक्ती उपस्थित होत्या. सिक्कीमचे मुख्य सचिव आर. तेलंग यांनी राष्ट्रपती कार्यालयाकडून जारी करण्यात आलेले नियुक्तीपत्र सादर करून उपस्थितांसमोर वाचून दाखवले. शपथविधीनंतर नवनियुक्त राज्यपाल गौतम यांनी पदभार स्वीकारण्यासंबंधीच्या शपथपत्रावर स्वाक्षरी केली. समारंभाला उपस्थित मुख्यमंत्री आणि इतर मान्यवरांनी गौतम यांचे अभिनंदन करून त्यांना शुभेच्छा दिल्या. त्यांच्या कार्यकाळात राज्याची प्रगती आणि समृद्धी साधली जावी, अशी अपेक्षा त्यांनी व्यक्त केली. नवनियुक्त राज्यपाल गौतम रविवारीच सिक्कीममध्ये दाखल झाले होते.

दिल्ली पोलिसांनी 9 कोटी ५3 लाख रुपयांची संभाव्य फसवणूक रोखली

नवी दिल्ली: दिल्ली पोलिसांच्या इंटेलिजन्स प्यूजन अँड स्ट्रॅटॅजिक ऑपरेशन्स (आयएफएसओ) विभागाच्या सतर्कतेमुळे पाच राज्यांमध्ये एकूण १ कोटी ५३ लाख ४८ हजार रुपयांची संभाव्य फसवणूक रोखण्यात आली. पोलिसांच्या प्रोटॅक्टिव्ह व्हिक्टिम आयडेंटिफिकेशन अँड प्रोटेक्शन पथकाने संशयास्पद बँक खात्यांमध्ये जमा झालेल्या रकमेच्या व्यवहारांचे विश्लेषण करून फसवणूक करणाऱ्यांच्या संपर्कात असलेल्या व्यक्तींची ओळख पटवली. या पथकाने दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र आणि गुजरातमधील पाच प्रकरणांत पीडितांशी संपर्क साधला. यापैकी चार प्रकरणे डिजिटल अरेस्टची, तर एक प्रकरण गुंतवणुकीच्या नावाखाली फसवणूक करण्याचा प्रयत्न होता. बँका, सायबर हेल्ललाइन आणि संबंधित राज्यांच्या पोलिसांशी समन्वय साधून पीडितांना पुढील रक्कम हस्तांतरित करण्यापासून रोखण्यात आले. पोलिसांच्या माहितीनुसार, या कारवाईची सुरुवात सायबर हेल्ललाइन १९३० वर आलेल्या तक्रारीपासून



झाली. १४ सप्टेंबर रोजी दिल्लीतील सागरपूर येथे राहणाऱ्या एका निवृत्त लष्करी अधिकाऱ्याला ठगांनी फोन केला. त्यांनी स्वतःला भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरणाचे (ट्राय) अधिकारी असल्याचे सांगितले. संबंधित अधिकाऱ्याच्या आधार कार्डावर सिम कार्ड आणि क्रेडिट कार्ड जारी करण्यात आले असून त्यांचा कॅनडामध्ये गैरबापर झाल्याचा दावा त्यांनी केला. त्यानंतर व्हिडिओ कॉलवर एका व्यक्तीशी बोलण्यास सांगण्यात आले. त्या व्यक्तीने स्वतःला दरियागंज पोलीस ठाण्यातील आयपीएस अधिकारी असल्याचे सांगून मनी लॉन्ड्रिंग प्रकरणात अटक करण्याची धमकी दिली. घाबरलेल्या अधिकाऱ्याने बँक ऑफ बडोदा, आयसीआयसीआय आणि एसबीआयएमधील खात्यांतून अनेक व्यवहारांद्वारे मोठी रक्कम हस्तांतरित केली. त्यांच्या तक्रारीनंतर

२९ सप्टेंबर रोजी ई-एफआयआर दाखल करण्यात आली. तपासादरम्यान आयसीआयसीआय बँक खात्यातून पाठवलेली रक्कम हैदराबादमधील अँक्सिस बँकेच्या खात्यात जमा झाल्याचे समोर आले. हे खाते फसवणुकीसाठी वापरले जाणारे म्यूल खाते असल्याचे पोलिसांनी सांगितले. तपासात २१ ते २९ सप्टेंबरदरम्यान अन्य पाच व्यक्तींनीही याच खात्यात पैसे पाठवल्याचे आढळले. याच धाग्याच्या आधारे पोलिसांना इतर पीडितांपर्यंत पोहोचता आले. पोलिस पथकाने १ ऑक्टोबर रोजी शोध घेतला असता, नजफगढ येथे राहणाऱ्या भारतीय विमानतळ प्राधिकरणाच्या ७७ वर्षीय निवृत्त कर्मचाऱ्याच्या बंधन बँक खात्यातून २९ सप्टेंबर रोजी पाठवलेले २५ लाख रुपयेही त्याच अँक्सिस बँक खात्यात जमा झाल्याचे आढळले. त्यांच्याशी संपर्क साधल्यानंतर १७ सप्टेंबरपासून ठगांनी त्यांना घरातच डिजिटल अरेस्ट करून ठेवल्याचे समोर आले. पोलिसांच्या म्हणण्यानुसार, हे ज्येष्ठ नागरिक इतके घाबरले होते की त्यांनी सुरुवातीला पोलीस पथकावर विश्वास ठेवण्यास नकार दिला.

भारताच्या आक्षेपानंतर जेडी व्हान्स नरमले, ‘बंधुआ मजूर’ वक्तव्याबद्दल दिले स्पष्टीकरण

वॉशिंग्टन: अमेरिकेचे उपराष्ट्रपती जेडी व्हान्स यांनी एच-१बी व्हिसावर काम करणाऱ्या परदेशी व्यावसायिकांना 'बंधुआ मजूर' असे संबोधणे ही शब्दांची चुकीची निवड होती, अशी कबुली दिली आहे. भारत सरकार आणि परराष्ट्र मंत्रालयाने या टिप्पणीला अत्यंत आक्षेपार्ह आणि वसाहतवादी मानसिकतेची आठवण करून देणारी ठरवल्यानंतर व्हान्स यांनी हे स्पष्टीकरण दिले आहे. शनिवारी एका वृत्तवाहिनीच्या मुलाखतीत

बोलताना व्हान्स यांनी स्पष्ट केले की, त्यांची टीका एच-१बी व्हिसाधारक कर्मचाऱ्यांवर नव्हती, तर अमेरिकन कंपन्या आणि सध्याच्या व्हिसा व्यवस्थेवर होती. या कार्यक्रमालादरम्यान एका भारतीय-अमेरिकन नागरिकाने विचारलेल्या प्रश्नाला उत्तर देताना व्हान्स यांनी आपल्या शब्दांची जबाबदारी स्वीकारली. ते म्हणाले, 'माझ्या शब्दांच्या निवडीत काही चूक झाली असेल, तर त्याची जबाबदारी माझी आहे. मात्र, माझी टिप्पणी एच-१बी



व्हिसाधारकांवर टीका करण्यासाठी नव्हती. मी या शब्दाचा वापर करतो, तेव्हा माझा रोख अशा कंपन्यांवर असतो, ज्या कर्मचाऱ्यांना या

परिस्थितीत अडकवतात.' व्हान्स यांनी असा युक्तिवाद केला की, सध्याची एच-१बी व्हिसा व्यवस्था परदेशी कर्मचाऱ्यांना अत्यंत

असुरक्षित स्थितीत आणते. कारण अमेरिकेतील त्यांचा कायदेशीर दर्जा पूर्णपणे त्यांच्या नियोक्यावर अवलंबून असतो. नोकरी गमावण्याच्या भीतीमुळे कर्मचाऱ्यांना आपल्या वरिष्ठांशी असलेले मतभेद किंवा तक्रारी मांडता येत नाहीत. नोकरी गेल्यास त्यांना मायदेशी परतावे लागू शकते. त्यामुळे या व्यवस्थेमुळे कंपन्यांना कर्मचाऱ्यांवर अत्यधिक नियंत्रण आणि अनुचित अधिकार मिळतात, असे व्हान्स यांनी सांगितले. स्थलांतराबाबतची आपली

भूमिका स्पष्ट करताना व्हान्स यांनी त्यांच्या वैयक्तिक आयुष्याचा आणि कुटुंबाचाही उल्लेख केला. पत्नी उषा व्हान्स यांच्या आई-वडिलांचा संदर्भ देत ते म्हणाले, 'माझे कुटुंब कुठून आले आहे, हे तुम्हाला माहीत आहे. माझे सासू-सासरे दक्षिण भारतातून अमेरिकेत आले होते. त्यांची मुलगी येथे जन्मली असून, आज ती अमेरिकेची सेकंड लेडी आहे. मला त्यांचा खूप अभिमान आहे.' स्थलांतरितांना अमानवी पद्धतीने सादर करण्याचा आपला कधीही हेतू

नव्हता, असेही व्हान्स यांनी स्पष्ट केले. परदेशी व्यावसायिकांचे स्वागत करणे आणि देशातील स्थानिक कामगारांच्या हितांचे संरक्षण करणे, या दोन्ही बाबींमध्ये अमेरिकेला योग्य संतुलन साधण्याची गरज असल्याचे त्यांनी मान्य केले. भारताच्या परराष्ट्र मंत्रालयाने या वक्तव्यावर तीव्र आक्षेप नोंदवल्यानंतर व्हान्स यांचे हे स्पष्टीकरण समोर आले आहे. मंत्रालयाने अशा प्रकारच्या शब्दप्रयोगाला अनुचित आणि आक्षेपार्ह ठरवले होते.

कनिका मान ने सुनाया परिवार का किस्सा

मां बनना या न बनना किसी की निजी पसंद है, लेकिन परिवार की अपेक्षाएं कई बार इस फैसले को लेकर दबाव पैदा कर देती हैं। अभिनेत्री कनिका मान ने रियलिटी शो ‘बिग बॉस 20’ में इसी मुद्दे पर अपनी बात रखी। आसिफ खान के साथ बातचीत के दौरान उन्होंने मजाकिया अंदाज में बताया कि उनके परिवार में उनकी अहमियत को मां बनने से जोड़कर देखा जाता है। कनिका ने हंसते हुए कहा कि जब तक वह दो-तीन बच्चों को जन्म नहीं देतीं, तब तक घरवाले उन्हें ‘जीरो’ समझते हैं।



उनकी इस टिप्पणी ने बातचीत को परिवार की अपेक्षाओं और महिलाओं पर मां बनने को लेकर पड़ने वाले सामाजिक दबाव की ओर मोड़ दिया। कनिका की बात सुनकर अभिनेता आसिफ खान ने भी अपने परिवार

से जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा साझा किया। उन्होंने बताया कि उनकी मां भी अक्सर उनके पिता बनने की इच्छा जाहिर करती हैं। पहले वह सीधे तौर पर अपनी ख्वाहिश बताती थीं, लेकिन अब मजाकिया अंदाज में

इशारों के जरिए अपनी बात कहती हैं। आसिफ के मुताबिक, कई बार उनकी प्रोफेशनल उपलब्धियों से ज्यादा उनकी मां को इस बात में दिलचस्पी रहती है कि वह कब पिता बनेंगे। उन्होंने बताया कि परिवार की ओर से बच्चे की उम्मीद इतनी ज्यादा रहती है कि उनकी दूसरी खुशियां भी कभी-कभी उसी चर्चा के बीच दब जाती हैं। आसिफ ने एक किस्सा सुनाते हुए बताया कि जब उन्होंने परिवार के साथ उमराह जाने के लिए टिकट बुक किए, तो वह काफी उत्साहित थे।

उन्होंने अपनी मां से कहा कि उनके पास एक खुशखबरी है। यह सुनते ही उनकी मां को लगा कि शायद वह पिता बनने वाले हैं। लेकिन जब आसिफ ने बताया कि खुशखबरी उमराह की यात्रा से जुड़ी है, तो उनकी मां की प्रतिक्रिया बदल गई। आसिफ ने मजाक में कहा कि बच्चों के अलावा भी दुनिया में बहुत कुछ है, जिसके बारे में सोचा जाना चाहिए। इस किस्से के जरिए उन्होंने बताया कि परिवार में बच्चे होने की उम्मीद किस तरह रोजमर्रा की बातचीत का हिस्सा बन जाती है।

नवरात्र पर कंगना रनौत का देसी अंदाज, गरबा लुक ने खींचा ध्यान

नवरात्र के रंग में रंगी अभिनेत्री कंगना रनौत ने इस बार अपने पारंपरिक अंदाज और सांस्कृतिक जुड़ाव से ध्यान खींचा है। अभिनेत्री और भाजपा सांसद ने सोशल मीडिया पर अपने फोटोशूट का बिहाइंड-द-सीन्स वीडियो साझा किया, जिसमें वह पारंपरिक परिधान में पोज देती और गरबा करती नजर आ रही हैं। कंगना ने भारतीय हस्तशिल्प और सांस्कृतिक विरासत को अपनाने पर खुशी भी जाहिर की। छत्तीसगढ़ में गरबा उत्सव के लिए पहुंचीं कंगना ने अपने संदेश में कहा कि देश की पारंपरिक शिल्प कला और विरासत से जुड़े परिधान पहनना उनके लिए खुशी की बात है। उन्होंने नवरात्र की शुभकामनाएं देते हुए त्योहार के आध्यात्मिक महत्व पर भी अपनी



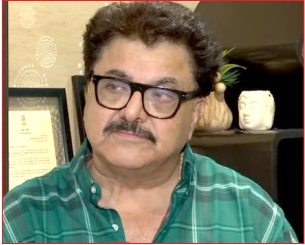
बात रखी। फोटोशूट के वीडियो में कंगना बहुरंगी और भारी कढ़ाई वाले लहंगा-चोली में नजर आईं। उन्होंने अपने लुक को काली चूड़ियों और चांदी के आभूषणों के साथ पूरा किया। पारंपरिक पोशाक और गहनों ने उनके उत्सवी अंदाज को खास बनाया। वीडियो में

कंगना अलग-अलग पोज देने के साथ गरबा करती भी दिखाई दीं। उन्होंने इस वीडियो के साथ फिल्म गोलियों की रासलीला राम-लीला का लोकप्रिय गाना 'नगाड़ा संग ढोल' जोड़ा, जिसे श्रेया घोषाल और उस्मान मीर ने गाया है। गाने का संगीत संजय लीला भंसाली ने तैयार किया था, जबकि इसके बोल सिद्धार्थ-गरिमा ने लिखे थे। कंगना ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में नवरात्र और गरबा के महत्व को भी साझा किया। उन्होंने लिखा कि नवरात्र स्त्रीत्व का उत्सव है और गरबा जीवन का नृत्य है। उनके संदेश के केंद्र में देवी शक्ति की आराधना रही। अभिनेत्री ने इस अवसर पर सभी को नवरात्र की शुभकामनाएं दीं। उनका संदेश त्योहार की धार्मिक भावना

और भारतीय परंपराओं से जुड़ाव को सामने लाता है। कंगना के वीडियो पर फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े लोगों ने भी प्रतिक्रिया दी। अभिनेता अनुपम खेर ने टिप्पणी करते हुए उनकी तारीफ की, जबकि सोशल मीडिया पर्सनैलिटी ओरी ने हार्ट इमोजी के जरिए अपनी प्रतिक्रिया दी। कंगना अक्सर अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए पारंपरिक त्योहारों और भारतीय संस्कृति से जुड़े पल साझा करती हैं। इस बार भी उनके फोटोशूट और नवरात्र संदेश ने प्रशंसकों का ध्यान खींचा। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के भांबला से ताल्लुक रखने वाली कंगना रनौत अपनी हिमाचली पहचान और पारंपरिक रीति-रिवाजों के प्रति लगाव जाहिर करती रही हैं।

टाइगर श्रॉफ पर फायरिंग से भड़के अशोक पंडित

अभिनेता टाइगर श्रॉफ पर फायरिंग की घटना ने फिल्म इंडस्ट्री में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। फिल्ममेकर अशोक पंडित ने इस हमले की कड़ी निंदा करते हुए, महाराष्ट्र सरकार और मुंबई पुलिस से दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाएं केवल फिल्मी हस्तियों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि आम लोगों के मन में भी डर पैदा करती हैं। बातचीत में अशोक पंडित ने अभिनेता जैकी श्रॉफ और उनके परिवार के प्रति संवेदना जताई। उन्होंने कहा कि टाइगर श्रॉफ सुरक्षित हैं, यह राहत की बात है, लेकिन इस घटना से परिवार को गहरा सदमा लगा होगा। पंडित ने फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े संगठनों की ओर से भी हमले की निंदा की और कहा कि कलाकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना जरूरी है। अशोक पंडित ने कहा कि हाल के समय में फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े लोगों और उनके घरों को निशाना बनाए जाने की घटनाओं ने चिंता बढ़ाई है।



उन्होंने यह सवाल भी उठाया कि पुलिस स्टेशन के नजदीक फायरिंग की घटना को अंजाम देकर हमलावरों का भाग जाना सुरक्षा व्यवस्था के लिहाज से चिंता का विषय है। उनके अनुसार, ऐसी घटनाओं की गंभीरता से जांच होनी चाहिए, ताकि अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की जा सके। फिल्ममेकर ने इससे पहले हुई हिंसक घटनाओं का उल्लेख करते हुए अभिनेता सलमान खान के घर पर फायरिंग, रोहित शेट्टी के घर पर गोलीबारी और नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या का जिक्र किया।

पेट की समस्याओं से बचना है तो बदलें रोजमर्रा की ये आदतें

आजकल पेट से जुड़ी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं, लेकिन इसका कारण केवल खान-पान तक सीमित नहीं रह गया है। बार-बार पेट फूलना, गैस, पेट दर्द, कब्ज या दस्त जैसी दिक्कतें कई लोगों की डेली लाइफ का हिस्सा बनती जा रही हैं।



खासकर IBS यानी irritable bowel syndrome में पेट और दिमाग के बीच का कनेक्शन अधिक महत्वपूर्ण होता है। दरअसल, मशहूर न्यूट्रिशनिस्ट ऋजुता दिवेकर ने हाल ही में एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, जिसमें वह रोजमर्रा की कुछ ऐसी आदतों पर बात करती हैं, जो हमारे पेट की सेहत पर बुरा असर डालता है।

खाने के समय फोन से बनावें दूरी

अपनी फिटनेस गाइडलाईस में खाना खाते समय फोन, टीवी या दूसरे गैजेट्स से दूरी बनाने की सलाह देती हैं। इससे आपके और आपके खाने के बीच एक कनेक्शन बनता है। खाने के समय लगातार स्क्रीन देखने से आपका ध्यान भोजन से हट जाता है। ऐसे में खाना कितनी तेजी से खा रहे हैं, कितना खा चुके हैं और कितनी भूख बची है, जरूरत से ज्यादा खा लेना, जैसी बातों का ध्यान नहीं रहता है। इसलिए शुरुआत

में कोशिश करें कि कम से कम एक मील पूरी तरह बिना फोन के खाएं।

लंबे समय तक फोन और पेट की परेशानी का कनेक्शन

सिर्फ फोन चलाना IBS का सीधा कारण नहीं है। IBS एक जटिल समस्या है, जिसमें आंतों की संवेदनशीलता, आंतों की एक्टिविटी, गट माइक्रोबायोम, खान-पान, तनाव और नींद जैसे कई कारक भूमिका निभाते हैं, लेकिन लंबे समय तक स्क्रीन पर रहना आपकी दिनचर्या, नींद, खाने की

आदतों और तनाव को प्रभावित कर सकता है।

ओरल हेल्थ को न करें नजरअंदाज

हम डेंटिस्ट के पास तब जाते हैं, जब दांतों में दर्द हो या कोई बड़ी समस्या हो। बता दें कि हमारे दांत हमारे पाचन में बड़ी भूमिका निभाते हैं। हमारा मुंह शरीर के पाचन तंत्र का शुरुआती हिस्सा है और यहां मौजूद माइक्रोब्स का संबंध आगे के गैस्ट्रो-इंटेस्टाइनल माइक्रोबायोम से होता है।

पेट को स्वस्थ रखने के लिए इन आदतों पर दें ध्यान अगर आपको अक्सर पेट फूलना, गैस, कब्ज, दस्त या पेट दर्द जैसी समस्या रहती है, तो खाने के समय फोन दूर रखें, भोजन धीरे-धीरे और चबाकर खाएं, नींद पूरी करें और स्ट्रेस को कम करें। इसके अलावा दिन में दो बार ब्रश करना और नियमित रूप से ओरल हाइजीन को बनाए रखना जरूरी है।

समय रहते पहचानें बच्चों में कैंसर के शुरुआती लक्षण

भागदौड़ भरी जिंदगी में कैंसर का खतरा इन दिनों बहुत बढ़ गया है। ऐसे में बच्चों में कैंसर होने बेहद चिंता का विषय बना हुआ है। बच्चों में कैंसर का पता चलते ही माता-पिता के मन में डर बैठ जाता है, लेकिन समय रहते अगर इसकी पहचान हो जाए, तो इलाज की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।इबड़ों के मुकाबले बच्चों में होने वाले कैंसर के लक्षण भी आम बीमारियों जैसे लगते हैं, जिस वजह से इन पर ध्यान नहीं दिया जाता। इसलिए जरूरी है कि माता-पिता, शिक्षक और परिवार के लोग बच्चों में दिखने वाले छोटे-छोटे बदलावों को भी गंभीरता से लें।

बच्चों में कैंसर के शुरुआती संकेत

लगातार बुखार आना, बिना कारण वजन कम होना, शरीर पर नीले निशान, गांठ बनना, आंखों में चमक या सिरदर्द और उल्टी जैसे कुछ शुरुआती चेतावनी संकेत हैं जो शरीर हमें पहले ही दे देता है। इन संकेतों को समझना और समय पर डॉक्टर से संपर्क करना ही बच्चे की जिंदगी बचा सकता है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन (WHO) के अनुसार, बच्चों में होने वाले कैंसर का जल्दी पता चलना उनके बचने की संभावना को काफी हद तक बढ़ा देता है, चूंकि बचपन के कैंसर के कई लक्षण सामान्य सर्दी-जुकाम या वायरल संक्रमण जैसे दिखते हैं, इसलिए माता-पिता और डॉक्टरों के लिए इसके शुरुआती चेतावनी संकेतों को पहचानना बेहद जरूरी है तो चलिए आपको बच्चों में कैंसर के कुछ प्रमुख शुरुआती संकेत के बारे में बताते हैं, जो इस प्रकार होते हैं।

बिना वजह लगातार बुखार

यह बच्चों में सबसे आम कैंसर है। कैंसर सेल्स बोन मैरो में नॉर्मल सेल्स की जगह ले लेते हैं। इससे शरीर की इम्यूनिटी कमजोर हो जाती है और शरीर संक्रमण से लड़ नहीं



पाता, इसलिए लगातार बुखार बना रहता है। साथ ही कैंसर सेल्स खुद ऐसे केमिकल्स (पायरोजन) छोड़ते हैं जो दिमाग के टेम्परेचर सेंटर को बढ़ा देते हैं।

असामान्य गांठ या सूजन

लसिका ग्रंथियों में कैंसर सेल्स जमा होने से बिना दर्द वाली गिल्टियां बन जाती हैं। अगर 2 हफ्ते से ज्यादा है, बुखार और वजन कम होने के साथ है, तो तुरंत जांच जरूरी है। गांठ का मतलब है कैंसर सेल्स एक जगह इकट्ठा हो रहे हैं। समय पर इलाज न मिलने पर ये खून के जरिए फेफड़े, लीवर, दिमाग तक फैल सकते हैं।

हड्डियों और जोड़ों में दर्द

ये कैंसर 10 से 18 साल के टीनएजर्स में सबसे ज्यादा होता है, जब हड्डियां तेजी से बढ़ रही होती हैं। कैंसर सेल्स हड्डी के अंदर तेजी से बढ़कर हड्डी को अंदर से कमजोर और खोखला कर देते हैं।

बिना कारण वजन कम होना और थकान कैंसर सेल्स बच्चों के खाने से मिलने वाली सारी कैलोरी और प्रोटीन खुद खा लेते हैं। बच्चा खा तो रहा है, लेकिन वजन बढ़ने की जगह घट रहा है। अगर बच्चे में यह लक्षण देखने को मिले, तो तुरंत जांच करवाएं। बच्चा खा तो रहा है, लेकिन वजन बढ़ने की जगह घट रहा है।

आसानी से चोट लगना, खून बहना बच्चों में रक्त कैंसर (ल्यूकेमिया) या अन्य गंभीर बीमारियों के शुरुआती लक्षणों में आसानी से चोट लगना और खून बहना बहुत आम हैं। बोन मैरो (अस्थि मज्जा) में कैंसर कोशिकाओं के बढ़ने के कारण स्वस्थ प्लेटलेट्स का निर्माण रुक जाता है।

प्लेटलेट्स खून का थक्का जमाने का काम करती हैं। इनकी कमी से शरीर में खून का थक्का नहीं बन पाता। कैंसर शरीर में ऐसे केमिकल्स छोड़ता है जिससे भूख मर जाती है, जो मिचलाता है और मसल्स तेजी से टूटने लगते हैं। यदि इस तरह के लक्षण 2 सप्ताह से अधिक समय तक बने रहते हैं या फिर और ज्यादा बिगड़ने लगते हैंस तो तुरंत जांच करवाएं और डॉक्टर से संपर्क करें।

बांस सिर्फ पौधा नहीं, सेहत से रोजगार तक है इसके कई फायदे

आमतौर पर गांवों या कस्बों में बांस को केवल घर की बाड़, टोकरी, चटाई, फर्नीचर या फिर निर्माण कार्य से जुड़ा एक पौधा ही माना जाता है। लेकिन असल में बांस की उपयोगिता इससे कहीं ज्यादा बड़ी है। बांस केवल लकड़ी का विकल्प नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, टिकाऊ खेती, ग्रामीण रोजगार, भोजन और हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति का एक अहम हिस्सा भी है। खासकर पूर्वोत्तर के राज्यों में, बांस की नई कोपलों को भोजन में शामिल करने की एक बहुत पुरानी और समृद्ध परंपरा रही है। आपको बता दें कि प्रत्येक वर्ष 18 सितंबर को विश्व बांस दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य बांस के लाभों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इसके उपयोग को बढ़ावा देना है। आज के दिन जानने की कोशिश करते हैं कि बांस केवल लकड़ी नहीं है, बल्कि हमारे जीवन में काफी उपयोगी है।

बढ़ना और इसका बहुउपयोगी होना है। इससे बने फर्नीचर, कागज, सजावटी सामान और घरेलू उत्पादों की मांग बाजार में लगातार बनी रहती है। ग्रामीण इलाकों में यह छोटे किसानों और कारीगरों की आजीविका का बड़ा जरिया बनता है। पर्यावरण के लिहाज से देखा जाए तो बांस की खेती मिट्टी के कटाव को रोकती है और जैव विविधता को बढ़ावा देती है। शोधकर्ताओं का भी मानना है कि बांस आधारित कृषि मॉडल से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई मजबूती दी जा सकती है। बांस की कोपलों को अगर सही तरीके से खाया जाए तो यह सेहत के लिए किसी सुपरफूड से कम नहीं हैं। इनमें भरपूर मात्रा में डायटरी फाइबर, प्रोटीन, खनिज (मिनरल्स) और जरूरी विटामिन पाए जाते हैं, जबकि फैट (वसा) की मात्रा बेहद कम होती है।

घर से लेकर थाली तक है

बांस का जादू

गांवों में आपने बांस का इस्तेमाल घर बनाने, टोकरी बुनने या चटाई तैयार करने में देखा



होगा। अक्सर लोग इसे केवल लकड़ी की तरह ही देखते हैं। लेकिन सच तो यह है कि बांस सिर्फ एक पौधा नहीं, बल्कि हमारी पूरी जीवनशैली का अहम हिस्सा है। यह पर्यावरण को साफ रखने, खेती सुधारने और ग्रामीण लोगों को रोजगार देने में बड़ी भूमिका निभाता है। भारत में, खासतौर पर पूर्वोत्तर के राज्यों में, बांस की नई कोपलों को बड़े चाव से खाने में इस्तेमाल किया जाता है।

पोषक तत्वों का खजाना है

बांस की कोपल

बांस की नई और नरम कोपलों को सब्जी की तरह खाया जाता है। ये खाने में जितनी ही स्वादिष्ट होती हैं, सेहत के लिए भी उतनी ही फायदेमंद होती हैं। इनमें फाइबर, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और जरूरी मिनरल्स पाए जाते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि बांस की कोपलों में फैट बहुत कम होता है। पूर्वोत्तर भारत में लोग इसे उबालकर, सुखाकर या अचार बनाकर सालों से खाते आ रहे हैं।

पेट और पाचन के लिए

बेहद फायदेमंद

अगर आपको पेट से जुड़ी परेशानियां रहती हैं, तो बांस की कोपलें आपके काम आ सकती हैं। इनमें मौजूद फाइबर पाचन तंत्र को दुरुस्त रखने में मदद करता है। अपने रोजाना के खाने में फाइबर वाली चीजें शामिल करने से कब्ज जैसी दिक्कत दूर रहती है। हालांकि, इसे किसी बीमारी की दवा मानने के बजाय संतुलित खाने का हिस्सा बनाना ज्यादा बेहतर है।

शरीर की इम्यूनिटी बढ़ाने में मददगार

वैज्ञानिकों के मुताबिक, बांस की कोपलों और पतियों में खास किस्म के एंटीऑक्सीडेंट मौजूद होते हैं। ये तत्व शरीर को अंदर से मजबूत बनाने में मदद करते हैं। रिसर्च में पाया गया है कि बांस में सूजन कम करने और बैक्टीरिया से लड़ने वाले गुण भी होते हैं। यह हमारे शरीर के मेटाबॉलिज्म को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

पारंपरिक इलाज में

बांसलोचन का महत्व

सदियों से भारत और एशिया के कई देशों में बांस का इस्तेमाल जड़ी-बूटी की तरह किया जाता रहा है। बांस से मिलने वाले 'बांसलोचन' का आयुर्वेद और पुरानी चिकित्सा पद्धतियों में काफी नाम है। लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि पारंपरिक इलाज किसी गंभीर बीमारी में सिर्फ घरेलू नुस्खों पर निर्भर न रहें और डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

कच्चा बांस खाने की

भूल कभी न करें

बांस की ताजी कोपलों को कभी भी सीधा या कच्चा नहीं खाना चाहिए। इनमें टैक्सिफिलिन नाम का एक प्राकृतिक तत्व होता है, जो पेट में जाकर नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए बांस की कोपलों को पकाने से पहले अच्छी तरह छीलकर और काटकर पानी में उबालना बहुत जरूरी है। सही तरीके से उबालने और पकाने से इसका नुकसानदेह असर पूरी तरह खत्म हो जाता है।

घर पर इस्तेमाल करते

समय रखें इन बातों का ध्यान

अगर आप बांस की कोपलों का इस्तेमाल करने जा रहे हैं, तो कुछ सावधानियां बरतना बहुत जरूरी है। हमेशा खाने योग्य प्रजाति के बांस की कोपल ही चुनें। इन्हें पकाने से पहले अच्छी तरह साफ करें और पूरी तरह उबाल लें। किसी भी अनजान प्रजाति के बांस का सेवन करने से बचें और इसे गंभीर बीमारियों का इलाज न समझें।

नोएडा में युवती का शव मिलने के बाद बुलंदशहर में हंगामा, दोबारा पोस्टमार्टम की मांग

संवाददाता

बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश। छतारी थाना क्षेत्र के शेखपुर गांव निवासी 22 वर्षीय अंजली का शव नोएडा सेक्टर-39 स्थित एक कमरे में मिलने के बाद परिजनों ने पुलिस कार्रवाई पर सवाल उठाए हैं। रविवार रात पोस्टमार्टम के बाद शव गांव पहुंचा तो सोमवार सुबह परिजनों और ग्रामीणों ने दोबारा पोस्टमार्टम कराने की मांग को लेकर हंगामा किया। जानकारी के अनुसार, अंजली गाजियाबाद की एक कंपनी में नौकरी करती थी और इंदिरापुरम में अपनी सहेली के साथ किएए के फ्लैट में रहती थी। रविवार को अवकाश के दिन उसकी बहन लतेश ने फोन किया तो कॉल पुलिस ने रिसीव की और उन्हें नोएडा पोस्टमार्टम हाउस पहुंचने के लिए कहा। इसके बाद लतेश अपने पति आकाश दीप के साथ वहां पहुंचीं, जहां अंजली का शव देखकर परिवार को घटना की जानकारी हुई। परिजनों का आरोप है कि उस समय नोएडा पुलिस ने यह स्पष्ट नहीं किया कि अंजली की मौत किन परिस्थितियों में हुई। उन्हें केवल इतना बताया गया कि उसका शव सेक्टर-39 स्थित एक कमरे में मिला है। रविवार रात पोस्टमार्टम के बाद शव गांव लाया गया और देर हो जाने के कारण अंतिम संस्कार सोमवार को करने का निर्णय लिया गया। सोमवार सुबह करीब



नौ बजे अंतिम संस्कार से पहले परिजनों ने स्थानीय पुलिस को सूचना देकर दोबारा पोस्टमार्टम कराने की मांग की। इसके बाद गांव में हंगामा शुरू हो गया। सूचना मिलने पर डिवाइ विधायक सीपी सिंह और सीओ डिवाइ मधुप कुमार सिंह मौके पर पहुंचे। स्थिति बिगड़ती देख छतारी, पहासू और नरीरा थानों की पुलिस भी बुला ली गई। करीब चार घंटे तक समझाने-बुझाने के बाद परिजन शांत हुए और अंतिम संस्कार के लिए सहमत हो गए। सीओ मधुप कुमार सिंह के अनुसार, परिजन नोएडा पुलिस की कार्रवाई पर आपत्ति जता रहे थे। संबंधित थाने के विवेचक से बात की गई, जिन्होंने बताया कि अभी किसी पर संदेह नहीं जताया गया है और शव मिलने से जुड़े सभी तथ्यों की जांच की जा रही है। तहरीर मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। इसके बाद परिजनों ने अंतिम संस्कार किया और गांव में स्थिति सामान्य बनी हुई है।

महानवमी पर गोरखनाथ मंदिर में सीएम योगी ने किया कन्या पूजन, नौ कन्याओं के पांव पखारकर लिया आशीर्वाद



संवाददाता

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को शारदीय नवरात्र की महानवमी तिथि पर गोरखनाथ मंदिर में गोरक्षपीठ की परंपरा के अनुसार कन्या पूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने नौ दुर्गा स्वरूपा कन्याओं के पांव पखारे, विधि-विधान से पूजन कर चुनरी ओढ़ाई और आरती उतारी। इसके बाद कन्याओं को श्रद्धार्पूर्वक भोजन कराकर उपहार एवं दक्षिणा प्रदान की और उनका आशीर्वाद लिया। गोरखनाथ मंदिर के अन्न क्षेत्र के प्रथम तल स्थित भोजन कक्ष में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच कन्या पूजन अनुष्ठान संपन्न हुआ। मुख्यमंत्री ने पीतल की परात में जल लेकर नौ कन्याओं के पांव धोए। इसके बाद उनके माथे पर रोली, चंदन, दही और अक्षत का तिलक लगाया। श्रीदुर्गासप्तशती के मंत्रों के बीच कन्याओं का पुष्पों और शक्तिपीठ की वेदी पर उगाए गए जौ के ज्वारों से पूजन किया गया। मुख्यमंत्री ने कन्याओं को माला पहनाई, चुनरी ओढ़ाई तथा उपहार और दक्षिणा

गोरक्षपीठ की परंपरा के अनुसार कन्याओं और बटुकों का विधि-विधान से पूजन, मुख्यमंत्री ने अपने हाथों से परोसा भोजन और दिए उपहार



देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। **कन्याओं और बटुकों को अपने हाथों से परोसा भोजन** कन्या पूजन के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कन्याओं और बटुकों को मंदिर की रसोई में तैयार ताजा भोजन प्रसाद अपने हाथों से परोसा। नौ कन्याओं के अतिरिक्त मंदिर पहुंचे बड़ी संख्या में अन्य बालिकाओं और बटुकों का भी पूजन किया गया। अन्न क्षेत्र के प्रथम तल के साथ भूतल पर भी कन्या भोज की व्यवस्था की गई थी। मुख्यमंत्री ने भोजन के दौरान कन्याओं और बटुकों से आत्मीय संवाद किया। उन्होंने मंदिर की व्यवस्था से जुड़े लोगों को निर्देश दिया कि सभी बच्चों को पर्याप्त भोजन प्रसाद मिले और किसी प्रकार की कमी न रहे। **गोरक्षपीठ की परंपरा के अनुसार बटुक पूजन भी किया** कन्या पूजन के साथ मुख्यमंत्री ने गोरक्षपीठ की परंपरा का निर्वहन करते हुए बटुक भैरव का भी विधि-विधान से

नगर निकायों में परिवार रजिस्टर की नकल नहीं मिलने से नागरिक परेशान

गांवों के शहरी सीमा में शामिल होने के बाद पेंशन, राशन कार्ड और सरकारी योजनाओं के लिए बड़ी मुश्किलें



संवाददाता

उन्नाव, उत्तर प्रदेश। उत्तर प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों को नगर पालिका और नगर पंचायतों में शामिल कर शहरी सुविधाएं उपलब्ध कराने के दावे किए जाते हैं, लेकिन ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के सामने अब परिवार रजिस्टर की नकल प्राप्त करना बड़ी समस्या बन गया है। पेंशन, राशन कार्ड, छात्रवृत्ति, जमीन से जुड़े दस्तावेजी कार्य और अन्य सरकारी योजनाओं के लिए परिवार रजिस्टर की नकल मांगे जाने पर नागरिकों को नगर निकाय, तहसील और ब्लॉक ब्लॉक कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। स्थानीय नागरिकों के अनुसार, नगर पालिका या नगर पंचायत कार्यालय पहुंचने पर उन्हें बताया जाता है कि शहरी निकायों में परिवार अथवा कुटुंब रजिस्टर के

रखरखाव और उसकी प्रमाणित नकल जारी करने की स्पष्ट व्यवस्था नहीं है। वहीं ग्राम पंचायतों में पंचायत सचिव के माध्यम से यह दस्तावेज उपलब्ध हो जाता है। समस्या तब बढ़ जाती है, जब कोई गांव नगर पंचायत या नगर पालिका की सीमा में शामिल हो जाता है। नागरिकों का कहना है कि वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, छात्रवृत्ति, राशन कार्ड में नाम जोड़ने या संशोधन कराने समेत कई सरकारी प्रक्रियाओं में परिवार रजिस्टर की नकल की जरूरत पड़ती है। कई मामलों में तहसील और ब्लॉक कार्यालय लोगों को नगर पालिका भेज देते हैं, जबकि नगर निकाय अधिकारी स्पष्ट कानूनी प्रावधान न होने की बात कहकर नकल जारी करने में असमर्थता जताते हैं। स्थानीय लोगों का सवाल है कि यदि किसी

मऊरानीपुर में 61.56 लाख की लागत से बनी सड़कों की गुणवत्ता की जांच, डीएम ने प्रयोगशाला परीक्षण के लिए निर्देश

देवेश प्रताप सिंह राठौर झांसी, उत्तर प्रदेश। जिलाधिकारी गौरांग राठी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस के बाद मऊरानीपुर तहसील क्षेत्र में निर्माणाधीन एवं नवनिर्मित विकास कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने नगर पालिका परिषद द्वारा कुल 61.56 लाख रुपये की लागत से कराए गए दो सड़क चौड़ीकरण कार्यों की गुणवत्ता की जांच कराई। जिलाधिकारी ने निर्माण में इस्तेमाल सामग्री के नमूने लेकर प्रयोगशाला में परीक्षण कराने के निर्देश दिए, ताकि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। जिलाधिकारी ने सबसे पहले मऊरानीपुर के मोहल्ला नदीपार स्टेशन में तहसील तिराहे से दूरसंचार केंद्र तक हॉटमिक्स सड़क चौड़ीकरण कार्य का निरीक्षण किया। इस मार्ग का निर्माण नगर पालिका परिषद मऊरानीपुर द्वारा 30.14 लाख रुपये की लागत से कराया गया है। इसके बाद उन्होंने फसल शोध केंद्र से डाक बंगला तिराहे तक 31.42 लाख रुपये की लागत से कराए गए हॉटमिक्स सड़क चौड़ीकरण कार्य का जायजा लिया। दोनों मार्गों का चौड़ीकरण 7.5



मीटर तक किया गया है। **सड़क की परतों की जांच, सामग्री के नमूने प्रयोगशाला भेजने के निर्देश** निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने लोक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता से सड़क निर्माण की तकनीकी गुणवत्ता की जांच कराई। इसके तहत दोनों मार्गों पर तीन से चार स्थानों का आकस्मिक चयन कर सड़क की क्रस्ट यानी विभिन्न निर्माण परतों की जांच की गई। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि निर्माण में प्रयुक्त सामग्री

ओंकारेश्वर में दो दिवसीय बंद का व्यापक असर श्रद्धालुओं को फूल-प्रसाद तक नहीं मिला

दुकानदारों, होटल संचालकों और ऑटो चालकों ने आंदोलन का किया समर्थन, प्रशासन से बातचीत कर समाधान निकालने की मांग



संवाददाता **ओंकारेश्वर, मध्य प्रदेश।** तीर्थनगरी ओंकारेश्वर में स्थानीय नागरिक परिषद के आह्वान पर आयोजित दो दिवसीय बंद का व्यापक असर देखने को मिला। स्थानीय दुकानदारों, होटल एवं गैस्ट हाउस संचालकों, ऑटो चालकों और अन्य व्यापारियों ने अपनी मांगों के समर्थन में प्रतिष्ठान बंद रखकर आंदोलन को सहयोग दिया। बाजार बंद रहने से स्थानीय कारोबार प्रभावित हुआ, वहीं भगवान ओंकारेश्वर के दर्शन के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से पहुंचे श्रद्धालुओं को भी परेशानियों का सामना करना पड़ा। कई श्रद्धालुओं को भगवान को अर्पित करने के लिए फूल और प्रसाद तक नहीं मिल सका। आम दिनों में श्रद्धालुओं की भीड़ और दुकानों की चक्कल-पहल से गुलजार रहने वाली तीर्थनगरी बंद के दौरान काफी हद तक सुनसान नजर आई। बस स्टैंड उपलब्ध होने में भी श्रद्धालुओं को दिक्कत सामने की निष्पक्ष जांच की मांग की है। श्रद्धा के इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है और मामले की जांच जारी है।

जानकारी मिली। उन्होंने कहा कि सरकार को स्थानीय नागरिकों की समस्याओं पर गंभीरता से विचार कर उनके व्यवसाय और श्रद्धालुओं की सुविधाओं के लिए उचित व्यवस्था करनी चाहिए। दिल्ली से आए आकाश गर्ग ने बताया कि प्रसाद की दुकानें बंद होने के कारण वे भगवान को अर्पित करने के लिए प्रसाद नहीं खरीद सके। उन्होंने कहा कि तीर्थनगरी में कई परिवार पिढ़ियों से कारोबार कर रहे हैं और धार्मिक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। प्रशासन को स्थानीय लोगों की समस्याओं का समाधान निकालना चाहिए। श्रद्धालुओं ने सुझाव दिया कि प्रशासन और स्थानीय नागरिकों के बीच बातचीत कर बीच का रास्ता निकाला जाए, ताकि आंदोलन की वजह बने मुद्दों का समाधान हो सके और तीर्थयात्रियों की सुविधाएं भी प्रभावित न हों। दो दिवसीय बंद ने एक ओर स्थानीय व्यापारियों और नागरिकों की समस्याओं को सामने रखा, वहीं दूसरी ओर तीर्थनगरी में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था का मुद्दा भी प्रमुखता से उभरा है।

सेवा संकल्प' के तहत वृहद निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित

संवाददाता

उन्नाव, उत्तर प्रदेश। जनता की सेवा को सर्वोपरि मानते हुए सदर विधायक पंकज गुप्ता के विशेष संयोजन में उनके कैप कार्यालय पर वृहद निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कानपुर के प्रख्यात वरिष्ठ हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ डॉ. गोविंद त्रिवेदी और उनके पुत्र डॉ. शिवाश त्रिवेदी ने बड़ी संख्या में लोगों को हड्डी एवं जोड़ संबंधी बीमारियों के साथ भविष्य में होने वाली विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से बचाव की ओर से जरूरतमंद मरीजों को निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। शिविर में सैकड़ों लोगों ने पहुंचकर अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया। विधायक पंकज गुप्ता ने कहा कि उनका प्रयास है कि जनपद के प्रत्येक नागरिक को बेहतर और आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं में स्वीकार किया जाए। लोगों का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी निकायों में विलय नागरिक सुविधाएं बढ़ाने के लिए होना चाहिए, न कि जरूरी दस्तावेजों के लिए नई परेशानी खड़ी करने के लिए। अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि शहरी सीमा में शामिल परिवारों के अभिलेखों की जिम्मेदारी आखिर किस विभाग की होगी और इसका स्थायी समाधान कब निकलेगा।



के कई गांवों में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जा चुके हैं, जहां चिकित्सकों की टीम द्वारा जांच, परामर्श और दवाइयां उपलब्ध कराई गई हैं। विधायक ने कहा कि उनके अनुरोध पर वरिष्ठ सर्जन डॉ. गोविंद त्रिवेदी ने पहली बार इस शिविर में समय देकर जनपदवासियों की सेवा की, जो सभी के लिए प्रसन्नता की बात है। इससे पहले विधायक ने डॉ. गोविंद त्रिवेदी और डॉ. शिवाश त्रिवेदी का अंगवस्त्र ओढ़ाकर तथा मां दुर्गा का विग्रह भेंट कर स्वागत किया। नवरात्रि के दौरान आयोजित शिविर की शुरुआत 10 वर्षीय पीहू तिवारी का स्वास्थ्य परीक्षण कर, उसे दवाइयां और परामर्श देकर की गई। शिविर में जनप्रतिनिधियों, अधिवक्ताओं, पत्रकारों सहित जिले के कई गणमान्य लोगों ने भी अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया। इस दौरान विधायक पुत्र प्रखर गुप्ता, उनकी पत्नी रश्मि गुप्ता, डॉ. मनीष सिंह सेंगर, सभासद ब्रजेश पांडे, प्रदीप सिंह, प्रमोद सिंह, पवन, रेडक्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष अमित मिश्रा सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

जिलाधिकारी गौरांग राठी ने सड़क चौड़ीकरण और 1.46 करोड़ रुपये की लागत से बन रहे खेल मैदान के पवेलियन का किया निरीक्षण, निर्माण सामग्री के नमूने जांच के लिए भेजने के निर्देश

के नमूने लेकर प्रयोगशाला में परीक्षण कराया जाए। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों में गुणवत्ता से किसी प्रकार का समझौता नहीं होना चाहिए।

1.46 करोड़ की लागत से बन रहे पवेलियन और मंच का निरीक्षण

इसके बाद जिलाधिकारी गौरांग राठी ने दमेले इंटर कॉलेज खेल मैदान में निर्माणाधीन पवेलियन एवं मंच का निरीक्षण किया। ग्रामीण अभियंत्रण विभाग के अधिशासी अभियंता ने बताया कि यह निर्माण कार्य बुंदेलखंड विकास निधि (जिलांश) के अंतर्गत 146.50 लाख रुपये की लागत से कराया जा रहा है। निर्माणकार्य23 मई2026कोप्रारंभहुआ था, जबकि अनुबंध के अनुसार इसे 22 सितंबर 2026 तक पूरा किया जाना निर्धारित था। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने निर्माण की गुणवत्ता का जायजा लिया, जो प्रथम दृष्टया संतोषजनक पाई गई। उन्होंने मंच को आकर्षक स्वरूप देने के लिए उसके पीछे खेल मैदान का नाम स्पष्ट और सुंदर

अक्षरों में अंकित कराने के निर्देश दिए। साथ ही अधिकारियों को निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण ढंग से शीघ्र पूरा कराने के निर्देश दिए। **निर्माण कार्यों की नियमित निगरानी पर जोर** जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी विकास कार्यों की नियमित निगरानी की जाए और निर्माण सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि विकास योजनाओं का लाभ आम जनता तक पहुंचाने के लिए कार्यों का मानकों के अनुरूप पूरा होना आवश्यक है। निरीक्षण के दौरान उप जिलाधिकारी मऊरानीपुर मनोज आर्य, ग्रामीण अभियंत्रण विभाग के अधिशासी अभियंता रजनीश कुमार, नगर पालिका परिषद मऊरानीपुर के अधिशासी अधिकारी महेंद्र चौधरी, लोक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता संदीप कुमार तथा नगर पालिका परिषद के अवर अभियंता मनोज पटेल सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

मध्यप्रदेश में फर्जी पासपोर्ट रैकेट की जांच तेज, 100 से अधिक लोग चिन्हित

सात गिरफ्तार, 70 से ज्यादा संदिग्ध पासपोर्ट से 120 से अधिक विदेश यात्राओं की जांच कर रही STF

संवाददाता

भोपाल। मध्यप्रदेश में बांग्लादेशी नागरिकों को कथित तौर पर फर्जी दस्तावेजों के आधार पर भारतीय पासपोर्ट दिलाने के मामले में स्पेशल टास्क फोर्स (STF) ने जांच का दायरा बढ़ा दिया है। अब तक 100 से अधिक लोगों को चिन्हित किया गया है, जबकि सात लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। जांच में पासपोर्ट बनवाने वाले कथित नेटवर्क के सरगना, एजेंट, गवाह और दस्तावेजों के सत्यापन से जुड़े लोगों की भूमिका की पड़ताल की जा रही है। करीब सवा महीने से चल रही जांच में सामने आया है कि मध्यप्रदेश में बने 70 से अधिक संदिग्ध भारतीय पासपोर्ट का इस्तेमाल कर 120 से ज्यादा विदेश यात्राएं की गईं। STF अब यह पता लगाने में जुटी है कि इन पासपोर्ट पर विदेश गए कितने लोग भारत लौटे और कितने अब भी बाहर हैं। इस मामले में अब तक कथित मास्टरमाइंड रियाल चौधरी के अलावा विप्लव अधिकारी, जाँय चौधरी, प्रियान चौधरी, गया प्रसाद गौतम, नसीम अख्तर और गुलाब राय गौतम को गिरफ्तार किया गया है। जांच एजेंसी ने 100 से अधिक लोगों को चिन्हित किया है। इनमें पासपोर्ट हासिल करने वाले लोगों के अलावा पुलिस सत्यापन और पासपोर्ट शाखा से जुड़े कर्मचारी एवं अधिकारी भी बताए जा रहे हैं। करीब 50 कर्मचारियों और अधिकारियों की भूमिका की जांच की जा रही है। STF उन लोगों की भूमिका भी जांच रही है, जिन्होंने कथित तौर पर फर्जी दस्तावेज तैयार कराने में मदद की या गवाह के रूप में दस्तावेजों



का समर्थन किया। बांग्लादेशी नागरिकों को मठों में ठहराने तथा उनके दस्तावेजों के सत्यापन में सहयोग करने के संदेह वाले लोगों से जुड़े तथ्यों की भी पड़ताल की जा रही है। जांच का मुख्य फोकस यह पता लगाना है कि फर्जी दस्तावेज तैयार होने से लेकर पुलिस सत्यापन और पासपोर्ट जारी किए जाने तक किस स्तर पर किसकी क्या भूमिका रही और निर्धारित नियमों का पालन हुआ या नहीं। पूछताछ के दौरान रियाल चौधरी के हवाले से यह बात भी सामने आई है कि भारतीय पासपोर्ट की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता के कारण इसे हासिल करने की कोशिश की गई। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, फरवरी 2026 के हेनले पासपोर्ट इंडेक्स में भारतीय पासपोर्ट 75वें स्थान पर था और भारतीय पासपोर्ट धारकों को कई देशों में बिना पूर्ण वीजा या वीजा ऑन अराइवल जैसी सुविधाएं उपलब्ध थीं। हालांकि प्रत्येक देश के प्रवेश नियम और शर्तें अलग-अलग होती हैं। STF अब पूरे नेटवर्क की कड़ियां जोड़ने के साथ विदेश यात्रा करने वाले संदिग्ध पासपोर्ट धारकों और दस्तावेज बनाने की प्रक्रिया में संभावित अनियमितताओं की जांच कर रही है।